IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, June 2026
Impact Factor: 8.2

वैदिक दर्शनों में कर्म सिद्धांत विमर्श

शोध छात्रा – सविता

निर्देशक - प्रो. गोविन्द प्रसाद मिश्र

दर्शनशास्त्र विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,अमरकंटक,म.प्र.

शोध सारांश - वैदिक दर्शन में कर्म सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत है |कर्म शब्द संस्कृत की "कृ"= करना धातु से बना है|जो कुछ भी किया जाता है कर्म है |कर्मों का फल भी इसका प्रयुक्त अर्थ होता है |दर्शन शास्त्र में इसका अर्थ कभी केवल बाह क्रिया न मानकर उसे धार्मिक,नैतिक तथा आत्मिक उन्नती का कभी उस परिणाम से होता जिसके हमारे पूर्वकर्म कारण है | गीता में कर्म को साधन बताया है |गीता का निष्काम कर्म लोकसंग्रह जैसे तत्वों पर आधारित है |वेदों में ब्राम्हण ग्रंथो ,उपनिषदों गीता तथा अन्य भारतीय दर्शनों में कर्म की विभिन्न व्याख्याए मिलती है |वैदिक चिंतन के अनुसार मनुष्य अपने कर्मो से ही सुख दुःख,जन्म मरण और मोक्ष को प्राप्त करता है |

मनुष्य जीवन में नैतिकता और ब्रम्हांडीय व्यवस्था का कर्म को मूल आधार माना गया है |भारतीय दर्शन में यह भी बताया गया है की प्रत्येक कर्म का फल अवश्य मिलता है ,कर्म चाहे अच्छा हो या बुरा मनुष्य को अपने कर्मो का फल भुगतना ही पड़ता है | इस शोध-पत्र में वैदिक दर्शन में प्रतिपादित कर्म सिद्धांत का दार्शनिक,नैतिक तथा आध्यात्मिक विश्लेषण किया है| साथ ही कर्म, कर्मफल तथा मोक्ष के संबंधों का विश्लेषण भी किया गया है | अध्ययन से यह सुनिश्चित होता है की वैदिक दर्शन में कर्म सिद्धांत केवल धार्मिक नहीं बल्कि मानव जीवन को अनुशासित एवं नैतिक बनाने का सार्वभौमिक सिद्धांत है |

मुख्य शब्द- वेद, उपनिषद, वेदांत, गीता, कर्म,निष्काम कर्म, ब्रम्हाज्ञान, यज्ञ, उपासना, योगाभ्यास, जीव, कर्मबंधन, पुरुषार्थ, पुनर्जन्म, मोक्षादि |

शोध परिकल्पना – जो मनुष्य फल की इच्छा छोड़कर कर्मों को करता है,वह मनुष्य कर्मबंधन से मुक्त रहता है| इसलिए फलेच्छा का त्याग करके, किये गये कर्म ही सात्विक और सत्कर्म कहे जाते हैं|ऐसे व्यक्ति ही कर्त्तव्य - परायण साधक कहा जाता है |निष्काम कर्म के प्रति गीता में कहा गया है की कर्म करते समय फल की इच्छा नहीं रखना चाहिए |

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, June 2026 Impact Factor: 8.2

हमें कोई न कोई कर्म करना ही है | किन्तु हमें यह देख लेना आवश्यक है की हमारा आचरण धर्म का हित संपादन करने वाला हो, जिसका परिणाम अध्यात्मिक शांति और संतोष की प्राप्ति है|कर्म योग आचरण का वह मार्ग है, जिसके द्वारा सेवा के लिए उत्सुक साधक अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है |

प्रस्तावना- वैदिक दर्शनों का आधारभूत तत्त्व कर्म सिद्धांत है और कर्म का जीवंत स्वरुप संस्कार उपासना एवं प्रतीक चेतना में परिलक्षित होता है वैदिक दर्शनों में कर्म दार्शनिक परम्परा का एक पुरानी नींव है| जो कर्म सिद्धांत को जीवन और जगत के संचालन वैदिक का मूल नियमन मन गया है| वैदिक दर्शनों में मन गया है की जैसा कर्म वैसा फल का नियम भी बनाया गया है यही कारण है की कर्म को भाग्य का निर्माता कहा गया है |गीता में फल को त्यागने की अपेक्षा उसे
निष्काम भाव से करने का पर बल दिया गया है |वैदिक दर्शन के अनुसार संसार कर्मप्रधान है तथा मनुष्य के वर्तमान एवं भविष्य का निर्माण उसके कर्मो से होता है कर्म सिद्धांत न केवल धार्मिक है बल्कि सामाजिक और नैतिक जीवन की एक नई राह है|

शोध-उद्देश्य

1. वैदिक दर्शन में कर्म सिद्धांत का अध्ययन करना |
2. गीता में निष्काम कर्म की अवधारणा को स्पष्ट करना |
3. वर्तमान जीवन में कर्म सिद्धांत की प्रासंगिता |
4. उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना |
5. नैतिकता और कर्म फल के सम्बन्ध को स्पष्ट करना |

कर्म सिद्धांत की प्रारंभिक उत्तपत्ति यह माना जाता है की वैदिक कर्म सिद्धांत की मूल उत्तपत्ति मुख्य चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद,सामवेद और अथर्ववेद, में मिलता है प्रारंभिक काल में कर्म का अर्थ मुख्यत: यज्ञ और अनिष्ठानों से था| किन्तु उपनिषदों मे यह आध्यात्मिक नैतिक और सामाजिक कर्म विशेषताओं की अवधारणा है |

वैदिक काल कर्म – यज्ञ अनुष्ठान

उपनिषद काल कर्म - कार्य नैतिक नियतिवाद के नैतिक सिद्धांत

गीता काल कर्म – निष्काम कर्म योग

DOI: 10.48175/IJARSCT-36228

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, June 2026 Impact Factor: 8.2

अन्य भारतीय दर्शन में कर्म – नैतिक नियम कार्य - करण पर आधारित

वैदिक काल में कर्म सिद्धांत -वेदों में कर्म को यज्ञ के रूप देखा गया है यह भी माना गया है की यज्ञ करने से देवताएँ प्रसन्न होकर सुख शांति और समृद्धि प्रदान करते है |

उपनिषदों में कर्म सिद्धांत कर्म सिद्धांत वह सिद्धांत है जो संसार के समस्त सिद्धांतो में व्यापत है | कोई सिद्धांत इसके बिना अपना अस्तित्व नही रख सकता, यह सिधांत सब में ओतप्रोत हो रहा है | यही कारण है की इसके ज्ञान के बिना मनुष्य दुःख से नहीं बच सकता और सुख को प्राप्त नहीं कर सकता | [1]

इस समय मनुष्य ने जैसा अपने जीवन में कर्म किया है उसी के अनुसार उसका भविष्य जीवन भी होगा |एवं इस स्वरुप को अच्छा बनाने के लिए जीवित अवस्था में उसे शुभकर्म करना चाहिए | ज्ञान प्राप्त करने के लिए योगाभ्यास साधना करना चाहिए एवं उपनिषद आदि धार्मिक ग्रंथो के अध्ययन से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए ||[2] तपस्या के कारण पुण्य के उदय होने से तत्त्व ज्ञान की प्राप्ति जीवित अवस्था में ही यदि किसी जीव को हो जाये तो उसके ज्ञान के प्रभाव से उसकी वासना नष्ट हो जाती है | अर्थात क्रियमाण कर्म का नाश हो जाता है |एवं संचित कर्म भी शक्तिहीन हो जाता है |यह जीवनमुक्ति की अवस्था है ,इस अवस्था में प्रारब्ध कर्म के अनुसार जीव का स्थूल शारीर स्थिर रहता है |और पश्चात प्रारब्ध कर्म का नाश हो जाने पर शारीर का पतन हो जाता है और जीव जीव आत्मा अपने स्वरुप का साक्षात् अनुभव करता है | उसके बाद चरमपद की प्राप्ति होती है||[3] संख्या एवं योग में कर्म सिद्धांत की व्याख्या स्वरुप, उद्देश्य तथा मुक्ति से उसके गहरे सम्बन्ध का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया जाता है, अब यह जानना आवश्यक है की कर्म क्या है?पुरुष और प्रकृति ये दो हैं इनमे से पुरुष में कभी परिवर्तन नही होता और प्रकृति के साथ सम्बन्ध जोड़ लेता है| तब प्रकृति के साथ सम्बन्ध मानने से तादात्म्य हो जाता है, तादात्म्य होने से जो प्राकृत वस्तुए प्राप्त है उनमे ममता होती है और उस ममता के कारण अप्राप्त वस्तुओं की कामना होती है|इस प्रकार जब तक कामना, ममता और तादात्म्य रहता है तब तक जो कुछ परिवर्तन क्रिया होती है उसका नाम 'कर्म' है| तादात्म्य के टूटने पर वही कर्म पुरुष के लिए अकर्म हो जाता है अर्थात वह कर्म क्रिया मात्र रह जाता है उसमे फलाजनकता नही रहती यह कर्म में अकर्म है|अकर्म की अवस्था में अर्थात स्वरुप का अनुभव होने पर उस महापुरुष के शारीर से जो क्रिया होती रहती है वह अकर्म में कर्म है||[4] तत्यापर्य यह हुआ की अपने निर्लिप्त स्वरुप का अनुभव न होने पर भी वास्तव में सब क्रियाए प्रकृति और उसके कार्य शारीर में होती है ;परन्तु यह शरीर से अपनी प्रथकता का अनुभव न होने से वे क्रियाएं कर्म बन जाती है ||[5] अतःकारण ज्ञानेन्द्रिया ,कर्मेन्द्रिया और प्राण इन सब नियत क्रिया से दूसरी अवश्यक करने वाला कर्म है प्रत्येक प्राणी हर पल कुछ न कुछ कर्म करता ही रहता है

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, June 2026 Impact Factor: 8.2

जैसा की न्यायभाष्यकार ने कहा है -ये कर्म वह राग्द्वेशादी के कारण करता है ||[6]प्रत्येक कर्म का फल व्यक्ति को अवश्य मिलता है भले ही वह कर्म अविद्यवश किया गया हो याज्ञवलक्य स्मृति के अनुसार यह आत्मा ही धर्माधर्मात्मक कर्मो को करने वाला है जिसमे कुछ कर्म वह स्वभाव के कारण तो कुछ अभ्यास के कारण करता है ||[7]

दूसरी ओर योग दर्शन में कर्म को मनुष्य के बंधन और मोक्ष दोनों का कारण माना ,योग दर्शन के अनुसार मनुष्य के प्रत्येक कर्म का प्रभाव उसके चित्त पर पड़ता है जिससे संस्कार उत्पन्न होते है और वही संस्कार भविष्य के दुःख तथा जन्म -मरण के चक्र का कारण बनते है **" सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा:"** [8]

अर्थात जब कर्मो का मूल कर्माशय विद्धमान रहता है तब तक जन्म आयु और भोग प्राप्त होते रहते है ||[9]

न्याय वैशेषिक दर्शन में कर्म की व्खाया "अदृष्ट"

के माध्यम से की जाती है कर्म से धर्माधर्म संस्कार अदृष्ट में संचरित होते रहते है तथा फलोमुनख होने पर आत्मा के कर्मफलभोगार्थ स्रष्टि उत्पन्न होती है |ईश्वर अदृष्ट से गति लेकर परमाणुओं में आद्यस्पंदन के रूप में संचरित कर देते है और सृष्टि प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है आत्मा जब तक जाल में फंसा है तब तक उनका बंधन बना रहता है | ज्ञान द्वारा कर्म का विनाश क्र देने पर नये कर्म उत्पन्न नही होते ,तथा संचरित एवं प्रारब्ध कर्मो का क्षय होने पर आत्मा का शरीर इन्द्रियों और मन से आत्यन्तिक वियोग हो जाता है |आत्मा शुद्ध रूप में स्थित हो जाती है यह मोक्ष है ||[10] गीता में कर्म योग का ज्ञान योग से कोई विरोध नही है लेकिन गीता का निष्काम कर्म ज्ञानी द्वारा ही सम्पादित हो सकती है शरीरधरी प्राणियों के लिए कर्मो का सर्वथा त्याग संभव नहीं है | ||[11]गीता ने कर्म योग में प्रवत्ति और निवृत्ति का अध्द्भुत समन्वय किया है गीता कर्म का निषेध नहीं करती ;कर्म में फलाशक्ति या कामना का निषेध करती है | वासना कामना आसक्ति या फलाकांक्षा कर्म का विषदंत है, जो कर्म कर्ता को बंधन में बांधता है |इस विषदंत को निकाल देने पर कर्म में बाँधने की शक्ति नही रह जाती | गीता का निष्काम कर्म योग (कर्म निषेध) नहीं है अपितु निष्काम कर्म (कामना रहित कर्म करना निषेध) है संन्यास का अर्थ कर्म त्याग नही है ,बल्कि कामना का त्याग है त्याग का अर्थ कर्म का त्याग नही बल्कि कर्मफल का त्याग है||[12] गीता का सबसे प्रसिद्ध उक्ति है –" कर्म -फल में तुम्हारा कोई अधिकार नही है, अतः तुम कर्म फल की कामना करो"|[13] पूर्व मीमांसा मुख्य विषय कर्म सिद्धांत है | "आचार्य जैमिनी का कथन है- की कर्म से एक प्रकार की शक्ति उत्पन्न होती जो स्वतः कर्म लाभ का नियमन करती है |इसे अपूर्व कहते है जीवों के व्यक्तिगत अपूर्व से जन्म जन्मान्तर का नियमन होता है ||[14] मीमांसा दर्शन में कर्म का तात्यापार वैदिक यज्ञ सम्बन्धी कर्मकाण्डों का अनुष्ठान है |कर्मकांड ही मीमांसा का सार

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, June 2026 Impact Factor: 8.2

माना गया है अतः प्रसिद्ध लोकोक्ति है – **"कर्मेति मीमांसका:"[15]** अन्य दर्शनों में जो ईश्वर का स्थान है वही मीमांसा में कर्म का स्थान है कर्म स्वरुप के सम्बन्ध में मीमांसाकों में मतभेद है |

सभी मीमांसक कर्म वाद में आस्था रखते हैं तथा वेद प्रतिपादित कर्म में विश्वास करते हैं, परन्तु कर्म के प्रेरक कारण के सम्बन्ध में कुमारिल और प्रभाकर में कुछ भेद है | कुमारिल के अनुसार कर्म विशेष के अनुष्ठानो से प्राणी की प्रवृति तभी होता है |जब इस कर्म से किसी इष्ट साधन की आशा हो, तात्य्पर्य यह है की कुमारिक के अनुसार धार्मिक कृत्यों के अनुष्ठान का कारण इष्ट साधन है | प्रभाकर को दृष्टिमें धार्मिक कृत्यों के अनुष्ठान कारण कार्यत्ता ज्ञान है| कुमारिल के अनुसार कार्य कर्म किसी इच्छा विशेष की सिद्धि के लिए किये जाते है |पर प्रभाकर के अनुसार काम्य कर्म में कामना का निर्देश सच्चे अधिकारी को परीक्षा के लिए है |वैसा कामना करने वाला पुरुष उस कर्म का सच्चा सिद्ध होता है|[16] अद्वेतवेदांत में कर्म सिद्धांत -आदि शंकराचार्य के अनुसार ब्रम्हा ही एक मात्र सत्य है और संसार मिथ्थया है |कर्म अविद्या से उत्पन्न होते है |जब तक आत्मज्ञान प्राप्त नहीं करता तब तक वह कर्मबंधन में बंधा रहता है |अद्वेतवेदांत में ज्ञान को मोक्ष का मुख्य साधन माना गया है | निष्काम कर्म चित्तशुद्धि का साधन है, किन्तु अंतिम मुक्ति केवल ब्रम्हाज्ञान से संभव है | "**कर्माणि कुर्वन्नेवेह जिजीविषेच्छतं छ समा:**"|

एवं त्वयि नान्यथेअस्ति न कर्म लिप्यते नरे||[17]

मनुष्य को इस संसार में कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए |ऐसे कर्म करते रहने से कर्म मनुष्य की बांधते नही है |इसके अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नही है |उपनिषद कहता है की मनुष्य को अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए जीवन जीना चाहिए,लेकिन कर्म के फल में आसक्ति नही रखनी चाहिए |ऐसे कर्म करने से व्यक्ति कर्मबंधन से मुक्त रहता है| [18] इस मंत्र की व्याख्या करते हुए शंकराचार्य कहते है -इस लोक में अग्निहोत्रादि कर्मों को करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए |मनुष्य की परमायु:सौ वर्ष तक बताया गया है | यदि सौ वर्ष जीने की इच्छा करें| तो नित्य नैमित्यक क्रियाओ को करते हुए जीने की इच्छा करें | अपने अपने निर्धारित वर्णाश्रम के अनुसार करे|

उपसंहार - ज्ञान एवं मोक्ष के लिए निष्काम कर्म की अवश्कता होती है |बिना कर्म के ज्ञान नहीं एयर बिना ज्ञान के कर्म या भक्ति नहीं होती नैतिक आचरण मन वचन और पावित्रता जिनके बहरी शुद्धि होती है |और स्थूल तथा सूक्ष्म उपासनाएं की जाती हैं सभी कर्म के अंतर्गत आते हैं इन सब के द्वारा शरीर का शोधन किया जाता है और इनसे जब अंत:करण सर्वथा निर्मल हो जाता है तभी उसमें ज्ञान की अभिव्यक्ति होती है उसके बाद परमपद की प्राप्ति होती है | शंकराचार्य के अनुसार मोक्ष का साधन केवल ज्ञान है जो मोक्ष को प्राप्त कर

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, June 2026
Impact Factor: 8.2

अविद्या को दूर करता है|कर्म और उपासना अभ्यास चित्त को शुद्ध और एकाग्र बनाने के साधन हैं | जिससे शुद्ध और एकाग्रचित ज्ञान की ज्योति ग्रहण कर सके | उपासना ध्यान मानसिक क्रिया है | कर्म और उपासना अविद्या में ही संभव है | ज्ञान और कर्म, प्रकाश और अंधकार के समान,परस्पर एक दुसरे के विरुद्ध हैं |इनका आपस में समुच्चय नहीं हो सकता | सिद्धों के लिए कोई विधि -निषेध नहीं है| तथा उनकी स्थितिमात्र से लोककल्याण होता है और उनके निष्काम कर्म लोकसंग्रह के लिए होते हैं |

शंकर ने अपने भाष्य में विददय का फल देवलोक की प्राप्ति और कर्मो का फल पितृलोक की प्राप्ति बताया गया है यह परस्परवादी आचार्यों ने अविद्य का अर्थ कर्म समझा है |उनके अनुसार वास्तविक एवं यथार्थरूप में कर्मो का अनुष्ठान करने वाले व्यक्तियों के समस्त दुर्गुण ,दुर्भावनाएं एवं असत्य आचरण आदि दूर हो जाते हैं |मोह,लोभ,क्रोध,शोक,हर्ष इत्यादि मानसिक विकारों से रहित होकर स्वयं को पवित्र बना लेता है |

सन्दर्भ -

1.डा.हरिनाथ झा

2.गीता -3 .5

3.शा.भाष्य -वृ. उ.(4.4 2)

4. इशो.-15

5.गीता -4.18

6.राग्द्वेषाधिकारच्छासत्येज्र्यामालालोभादयो दोषा भवन्ति |
दौषै: प्रयुक्त: प्रवर्तमान: वाचा शरीरेण मनाप्ता न्याय भाष्य (1.1.2)

7.नत्वेत तृ कृतो धर्मः कर्तुभवति निष्फल:|मनु (4.1.73)

8.योग सूत्र 2.13

9.भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन चंद्रधर शर्मा |

10.चंद्रधर शर्मा भारतीय दर्शन और अनुशीलन |

11.गीता -3.27

12. गीता 3.5-9 लोकोअयं कर्म बंधन:|

13.गीता 2.47-कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषुकादाचन |

14.मीमांसा दर्शन प. श्री राम शर्मा पृष्ट मं.13

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, June 2026
Impact Factor: 8.2

15.भारतीय दर्शन -पं.बलदेव उपाध्याय -पृष्ट सं.332

16.pandey Surendra kumar -भारतीय दर्शनों में कर्म सिद्धांत |

17.ईशो.शिव प्रसाद द्विवेदी

18. ईशो.मंत्र -2